शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पुनर्जन्म : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

*डॉ. सत्यवीर सिंह
**ज्योति
कार्यवाहक प्राचार्य
*चौ.जी.एस. गर्ल्स डिग्री कॉलेज, बांदूखेड़ी (सहारनपुर)
**छात्रा, राजनीतिक विज्ञान, चौ चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

पुनर्जन्म के सिद्धान्त पास्टलाइफ रिग्रेशन थेरेपी के सिद्धान्त आधारित हैं। हिन्दू सहित तमाम धर्मों, संप्रदायों और सभ्यताओं में पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर विश्वास किया जाता है। इसके अलावा, यह थेरेपी काफी हद तक 'काज एंड इफेक्ट' सिद्धान्त पर भी आधारित है। पास्ट लाइफ रिग्रेशन की दिशा में काम कर रहे विशेषज्ञों की मानें तो इसके माध्यम में इंसान की हर तरह की समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है, चाहे वह शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक व आर्थिक समस्याओं में से कोई भी क्यों न हों। प्रस्तुत शोध पत्र में पुनर्जन्म के विभिन्न सिद्धांतों पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

पास्ट लाइफ रिग्रेशन एक्सपर्ट डॉ. संजय चुग के अनुसार, 'अब तक अस्थमा, वर्टिगों, कैंसर, आर्थराइटिस, स्किन समस्या, माइग्रेन जैसी तमाम शारीरिक समस्याओं से लेकर हर तरह के डर या फोबिया, घबराहट, एंग्जाइटी, डिप्रेशन जैसी तमाम मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निदान इस थेरेपी से बखूबी किया जा चुका है। मुम्बई की क्लिनिकल सायिकोलोजिस्ट डॉ.तृप्ति जैन कहती हैं, ''पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी में व्यक्ति को समस्या की जड़ तक पहुंचने में मदद की जाती है। इस प्रक्रिया में जब वह समस्या के पीछे छिपे कारण को जानता है, तो वह समझ जाता है कि यह वजह उसके मौजूदा दौर से संबंधित न होकर पिछले किसी जन्म से है और इस अहसास भर से ही उसे पिछली भावनाओं या अनुभवों से छुटकारा मिल जाता है।'' बहरहाल, पास्ट लाइफ होती है या नहीं, मरने के बाद इंसान की यादें और अनुभव उसका पीछा छोड़ते हैं या नहीं, पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी से इंसानी जीवन की तमाम समस्याओं का हल संभव है या नहीं इसको लेकर सर्वसम्मति की स्थिति नहीं है। पुनर्जन्म पर कुछ लोग विश्वास करते हैं तो कुछ इसे महज एक विचार या फैंटेसी मानते हैं। लेकिन पुनर्जन्म के कई प्रमाण भी हैं। दुनिया में पुनर्जन्म पर विश्वास करने वालों की संख्या उन लोगों से ज्यादा है जो इसे मात्र एक विचार या फैंटेसी मानते हैं। पिछली सदी में पश्चिमी देशों, विशेषकर अमेरिका में पुनर्जन्म को लेकर जो विस्तृत शोध हुए हैं, उन्होंने पाश्चात्य विचारधारा को इस अवधारणा पर विश्वास करने के लिए बाध्य किया है।

पुनर्जन्म के विभिन्न सिद्धांत - शोधकर्ताओं ने अनेक ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किए हैं जो इनके

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विश्वास को बल प्रदान करते हैं। 'पास्ट लाइफ रिग्रेशन' यानी पूर्व जन्म में झांकने का ऐसा ही एक तरीका है जो तमाम देशों में काफी लोकप्रिय है। हालांकि सम्मोहन (हिप्नोटिस) के जरिए पूर्व जन्म में पहुंचना विवादास्पद भी माना जाता है। तर्क दिया जाता है कि हिप्नोटिस से अवचेतन मन तक पहुंचने में मदद तो मिलती है लेकिन उससे मिली सूचनाओं को अकसर झूठी यादें कहा जाता है और विश्वसनीय नहीं माना जाता। बावजूद इसके, इसे पूरी तरह नकारा भी नहीं जा सकता क्योंकि बहुत से ऐसे मामलों में जब पूर्व जन्म से जुड़ी सूचनाओं की जांच-पड़ताल की गई तो वे सही निकली।

1952 में रूथ के थेरेपिस्ट मोरे ब्रेनस्टीन जब उनको पूर्व जन्म में ले गई तो एकाएक वह आयरिश बोलने लगीं जिसे वह जानती ही नहीं थी। रूथ ने दावा किया कि उसका नाम ब्राइडे मर्फी है जो 19वीं सदी में आयरलैंड के बेलाफास्ट में रहती थी।

ब्राइडे मर्फी के रूप में रूथ ने अपने पूर्व जन्म की अनेक बातें विस्तारपूर्वक बताईं। इस दौरान उसने बेलाफास्ट के दो पंसारियों के नाम बताए जिनसे वह खाने-पीने का सामान खरीदा करती थी। बेलाफास्ट के एक लाइब्रेरियन ने 1865-66 की सिटी डायरेक्टरी में दोनों का नाम खोज निकाला। रूथ के बताए अनुसार उनका नाम क्रमशः मिस्टर फार और जान कैरिगन था और दोनों पंसारी थे। रूथ की यह कहानी बर्नेश्तीन की किताब तथा 1956 में बनी फिल्म 'द सर्च फॉर ब्राइडे मर्फी' में सामने आई।

कई बार एक जैसी शक्ति और कद-काठी को भी पूर्व जन्म से जोड़ा जाता है। जेफ्री ने अपनी पुस्तक 'समवन एल्स यस्टरडे' में यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया है कि इस जन्म में कोई व्यक्ति पिछले जन्म के किसी पुरूष या महिला की शक्ल से पूरी तरह मेल खा सकता है।

लेखक ने स्वयं यह बात महसूस की है कि किसी व्यक्ति की पहले दिन की मुलाकात से पहले उस व्यक्ति का स्वप्न के दौरान वार्तालाप का आश्चर्यजनक अनुभव सामने आया। दुनिया में ऐसे दर्जनों लोग हैं जो दावा करते रहे हैं कि इस जन्म में वे किसके अवतार हैं। ऐसे मामलें में शारीरिक समानताएँ ही नहीं, आदतें और शौक भी एक जैसे पाए गए। इसके अलावा किसी चीज, स्थान, भाषा आदि के प्रति खास रूझान या रूचि को भी पुनर्जम से जोड़ा जाता है।

हाल ही में हिन्दुस्तान अखबार के माध्यम से मुजफ्फरनगर के कुटबी गांव का रहने वाले चार वर्ष के मनीष ने उस समय लोगों को हैरान कर दिया जब उसने अपने पूर्व जन्म के बारे में अपनी हत्या करने वाले इस जन्म के पिता के बारे में बताया तथा उसने बताया कि इस जन्म में जो उसके पिता हैं उसने पूर्व जन्म में चार वर्ष पहले उसकी हत्या फावड़े से की थी। आश्चर्य की बात यह थी कि बताये गये फावड़े के स्थान पर इस जन्म में इस बच्चे के सर पर बाल नहीं उगे थे तथा स्पष्ट निशान सिर पर था। बच्चे ने अपने पूर्व जन्म के पिता का नाम ग्राम प्रधान को नाम से पुकारा तथा सभी लोगों को अपने पूर्व जन्म के घर लेकर गया तथा पूर्व जन्म से जुड़ी तमाम पारिवारिक परिस्थितियों से सबको अवगत कर हैरान कर दिया।

बागपत के एक स्थानीय अखबार के मुताबिक एक बच्ची ने अपने पूर्व जन्म के बारे में बताकर ग्रामीण लोगों को उस समय हैरान कर दिया, तब उसने अपने बीते हुए जन्म की परिस्थितियों, परिवारजनों तथा नाम आदि के बारे में अवगत कराया। इतना ही नहीं वह बच्ची अपने पूर्व

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जन्म के स्थान पर जाने के लिए जिद कर रही थी तथा अपने पूर्व जन्म के रिश्तेदारों से मिलने के लिए आतुर थी तथा अपने पूर्व जन्म के घर जाकर उसने सबको पहचाना। इस समय विवाद का विषय यह बन गया था कि बच्ची को पूर्व जन्म के लोग अपनी बताकर अपने पास रखना चाहते थे तथा इस जन्म के परिवारजन उसे छोड़ना नहीं चाहते थे।

पुनर्जन्म के मिल रहे प्रमाण

अब तक पूरे संसार में पुनर्जन्म के कई प्रमाण मिल चुके हैं। कई वैज्ञानिक ऐसे हजारों मामले लेकर इस पर अध्ययन कर चुके हैं। इस विषय का अधिकांश अध्ययन छोटी उम्र के बच्चों पर हुआ है। जब कुछ प्रमाण मिले तो उन पर अध्ययन भी किया गया।

शरीर के निशान भी पिछले जन्म की पहचान

डॉ.राकेश के अनुसार कई बार हम देखते हैं कि कुछ लोगों के शरीर पर जलने का निशान, कटने का निशान और इसी तरह के अन्य जन्मजात निशान शरीर पर मिलते हैं। इन्हें पिछले जन्म की निशानी से जोड़कर देखा जाता है।

मार्च, 2013 में नेशनल स्माईल (पी.जी.) महिला कालेज में पुनर्जन्म एवं हिप्नोटिज्म के बारे में सात दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यशाला में अनेक लड़कियों पर हिप्नोटिज्म का प्रयोग कर डॉ. आशा भटनागर ने बताया कि हिप्नोटिज्म का प्रयोग कर पिछले जन्म में ले जाया गया। इसका डेमोस्ट्रेशन भी दिखाया गया। बहरहाल कालेज में पिछले जन्म के बारे में जानने की इच्छा को लेकर सभी उत्सुकता से पूरी प्रक्रिया को देखा एवं आश्चर्यचकित हुए। जब वहाँ मौजूद लड़कियों ने अपने पिछले जन्म के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

''पिछले जन्म में कौन-किस रूप में था। शरीर पर बने निशानों की आखिर क्या वजह होती है ? ये सब संभव भी है या नहीं। ऐसे तमाम सवालों के जवाब इस्माईल गर्ल्स कालेज में मार्च, 2014 में हुई कार्यशाला में प्राप्त हुए। हिप्नोटिज्म के प्रयोग से एक्सपर्ट कई छात्राओं को पिछले जन्म में लेकर गये। पुराने राज का खुलासा हुआ। इन तमाम बातों को जानने के लिए छात्राएं उत्सुक थीं। सभी टीचर्स भी इस घड़ी का इंतजार कर रहे थे।'' हिप्नोटिज्म के जरिए सभी सहभागी लड़कियों को हिप्नोताईज कर उन्हें उनके पूर्व जन्म में ले जाया गया।

क्या है हिप्नोटिज्म (सम्मोहन) ? इसका इस्तेमाल क्यों करना पड़ता है ? क्या इससे जीवन के सीक्रेट्स भी जान सकते हैं ? क्या इसमें व्यक्ति पूरी तरह हिप्नोटिज्म करने वाले व्यक्ति के वश में हो जाता है और कुछ भी कर सकता है ?

कुछ इस तरह के सवालों के साथ इस्माईल नेशनल गर्ल्स पी.जी.कालेज में मनोवैज्ञानिक समस्याएं निदान तथा प्रबंधन विषय पर कार्यशाला हुई। जिसमें पांचवे दिन हिप्नोटिज्म विषय पर गहनता से चर्चा की गई। इसके साथ-साथ योगनिद्रा के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गई और डेमोस्ट्रेशन भी प्रस्तुत किया गया।

आगरा से आए डॉ.राकेश जैन ने हिपनोसिस एण्ड पास्ट लाईफ रिग्रेशन विषय पर वक्तव्य दिया। उन्होंने अपने दो दिन के लेक्चर में पहले दिन हिप्नोसिस पर विस्तार से जानकारी दी। बताया कि हिप्नोटिज्म विज्ञान की ऐसी पद्धति है, जिसका इस्तेमाल सुझाव के साथ किया जाता है। व्यक्ति को सब कुछ पता होता है कि वह क्या कर रहा है। हम केवल उसे सुझाव देते हैं और यदि उसमें समर्पण की भावना होती है, तो

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिपनोटिज्म में सफलता प्राप्त होती है। डॉ. राकेश ने बताया कि व्यक्ति में समर्पण भाव जरूरी हैं। उसके मन को मालूम होता है उससे अब क्या पूछा जा रहा है और क्या करने के लिए कहा जा रहा है। यह सोचना बिल्कुल गलत है कि हिप्नोटिज्म के बाद व्यक्ति से ब्लैंक चेक पर साइन या फिर कुछ भी करवाया जा सकता है, क्योंकि हिप्नोटिज्म में व्यक्ति का दिमाग नहीं सोता है। वह एक आर्टिफिशियल नींद में होता है। साधारण नींद में व्यक्ति हर स्तर पर सोता है।

क्या है हिप्नोटिज्म ?

हिप्नोटिज्म में आंखों को केन्द्रित करने के बाद व्यक्ति को रिलेक्स मूड में लेकर जाते हैं, उसके बाद उसे सुझाव देते हैं और वह हमें सहयोग करता है, तो हम उस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। कई बार इसमें रिजल्ट शत-प्रतिशत सही मिलते हैं और कई बार कुछ औसत रिजल्ट भी आते हैं। डॉ.आशा भटनागर ने बताया कि लड़कियों में सुझाव ग्रहण करने की शक्ति लड़कों से ज्यादा होती है। इसलिए वे जल्द हिपनोटाइज हो सकती हैं। उन्होंने बताया कि स्टेज हिपनोटिज्म मनोरंजन के लिए किया जाता है। इसमें व्यक्तियों से मंच पर रूचिकर कार्य कराए जाते हैं, यदि यू ट्यूब पर स्टेज हिपनोटिज्म डाला जाए, तो बहुत कुछ अध्ययन करने के लिए और जानने के लिए भी मिलेगा।

मुख्य वक्ता हरिद्वार से डॉ.यतेन्द्र अमोली ने बताया कि योगनिद्रा से बहुत कुछ डेवलप करने की ताकत होती है। एक घण्टे की योगनिद्रा छः घण्टे की नींद के बराबर होती है। जो लोग इस विधि को अपनाते हैं, उनके जीने का स्टाइल भी अलग होता है। इसके बाद योगनिद्रा का डेमोस्ट्रेशन दिखाया गया और हाल में चटाई पर छात्राओं को इसका अभ्यास भी करके दिखाया गया। डॉ. साधना ने योग शक्ति के बारे बताया।

देश और काल के प्रति लगाव

उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति क्यों अपने देश के स्वतंत्रता संग्राम के प्रति खास दिलचस्पी दिखाता है और उसका पूरा इतिहास पढ़ डालता है, इसी तरह क्यों किसी किशोर में बचपन से ही फ्रांस या अमेरिका जैसे देश के प्रति खास लगाव पैदा हो जाता है जिसे उसने कभी देखा ही नहीं। क्या इसका संबंध कहीं किसी पूर्व जन्म से तो नहीं ? इस तरह के सवालों को लेकर लोगों की न सिर्फ अब दिलचस्पी बढ़ गई है बल्कि इसके बारे में तमाम तरह के शोध भी चल रहे हैं। कुछ लोग यह दावा कर रहे हैं ये सारे लक्षण पूर्व जन्म के प्रभावों के कारण हैं। इसे लेकर कुछ तथ्य भी जुटा लिए गए हैं पर विज्ञान जगत अब भी इन दावों को मानने से परहेज कर रहा है।

देजा वू' यानी आलरेडी सीन

बहुत से लोगों को ऐसे अनुभव भी होते रहे हैं जब किसी व्यक्ति या स्थान को पहली बार देखने पर उन्हें लगा जैसे वे उसे पहले से जानते हों। इस स्थिति को 'देजा वू' कहा जाता है। 'देजा वू' फ्रांसीसी शब्द है जिसका मतलब है 'आलरेडी सीन' यानी पहले से ही परिचित।

कई लोग इस तरह के अनुभवों को पूर्वजन्म से जोड़ते हैं। इयान स्टीवेंसन और दूसरे शोधकर्ताओं ने इस बारे में लिखा है कि 'देजा वू' के कई मामलों को पुनर्जन्म से जोड़ा जा सकता है।

शोधकर्ता एंथनी पीक ने लिखा है कि लोगों को 'देजा वू' अनुभव तब होते हैं जब वे अपना जीवन पहली बार नहीं बल्कि कम से कम दूसरी बार जी रहे हैं।

पास्ट लाइफ कनेक्शन

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

38 साल के विक्रम मीडिया हाउस में काम करते हैं। हैंडसम विक्रम 12-13 साल की उम्र से ही मुहासों व उसके चलते छिलके की तरह उतरती स्किन की समस्या से बेहद त्रस्त हैं। कुछ समय पहले उन्होंने पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी की सिटिंग ली। जब इस समस्या की जड़ को ढूंढने की कोशिश की गई तो तार जुड़े उनकी उस जिन्दगी से जहां वह 12 साल के अमेरिकी बच्चे थे। यह वह दौर था, जब अमेरिका में पेस्टि साइड्स का इस्तेमाल शुरू हुआ था और हवाई जहाज द्वारा कीटनाशक दवा छिड़की जा रही थी। वहीं से उनकी यह तकलीफ शुरू हुई। खैर, इस सिटिंग के बाद उनकी स्किन में जबर्दस्त सुधार आया और उनकी समस्या काफी हद तक ठीक होने लगी है। इतना ही नहीं, चूहों से बुरी तरह नफरत करने वाले विक्रम उस समय यह जानकर हैरान रह गए कि एक लाइफ में उनकी मृत्यु प्लेग से हुई थी, उस दौरान वह इटली में रहते थे।

लम्बे समय तक अस्थमा से परेशान रहने वाली संजीव शर्मा को तीन साल पहले पास्ट लाइफ रिग्रेशन के दरम्यान पता चला कि पिछले किसी जन्म में उनकी मृत्यु पानी में डूबने से हुई थी। रिग्रेशन के दौरान उन्होंने लगभग वैसी ही घुटन महसूस की। इसके बाद आज वह उस तकलीफ से पूरी तरह से उबर चुके हैं। हमेशा प्लेन व ऊँचाई से डरने वाली अनीता की समस्या के पीछे वजह निकली कि किसी जन्म में उसकी मृत्यु एक हवाई दुर्घटना में हुई थी।

ये उदाहरण किसी किस्मे-कहानी के नहीं बल्कि हकीकत हैं और इस बात के सबूत हैं कि इनकी जिन्दगी के कुछ गहरी और महत्वपूर्ण समस्याओं के सूत्र उनकी मौजूदा जिन्दगी से न जुड़े होकर पिछली जिन्दगियों से जुड़े हैं। उनकी जिन्दगी का यह सच सामने आया पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी के जरिए।

गुजरात के जामनगर की वाली 32 साल की रचना जड़ेजा एक अजीब सी बीमारी से परेशान थीं। उन्हें हर वक्त सांस घुटती सी महसूस होती थी। बहुत से डॉक्टर, वैद्य से इलाज कराने के बाद भी जब उनकी हालत पर कोई असर नहीं पड़ा तो उन्होंने पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी के लिए एक डॉक्टर से सम्पर्क किया। इस प्रक्रिया में उन्हें पता चला कि पिछले जन्म में उनकी गला दबाकर हत्या कर दी गई थी, जिस वजह से इस जन्म में भी उन्हें हर समय गला दबाए जाते रहने का एहसास होता था, जबकि यह कोई बीमारी थी ही नहीं।

पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी करने वाली डॉक्टर स्वाति जैन कहती हैं कि यह दरअसल एक मनोवैज्ञानिक असर है जिसका सीधे तौर पर किसी बीमारी से कोई संबंध नहीं है। यह पिछले जन्म की किसी भी घटना के असर से पैदा हुई स्थिति है जो इस जन्म में वाकई है नहीं, लेकिन कहीं न कहीं अंतर्मन में वह डर बैठा रहता है और थेरेपी में इसी डर को दूर करने की कोशिश की जाती है।

हिन्दू धर्म में यह माना गया है कि किसी व्यक्ति के शरीर में आत्मा और मन दोनों होते हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति विश्लेषण कर अपने निर्णय लेता है। आत्मा अजर अमर है। यह माना जाता है कि आत्मा शरीर बदलती है इसी दौरान इस प्रक्रिया में पूर्व जन्म की यादें 5 वर्ष तक के बच्चे में आने की सम्भावना बनी रहती है। यह शोध का विषय है कि किस प्रकार एक मासूम बच्चो अपने पूर्व जन्म के बारे में जटिल यादों को संजोकर रखता है तथा यह यादें किस प्रकार उसके मस्तिष्क तक पहुंचती हैं।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अतार्किक भय - यह माना जाता है कि हमारे इस जन्म में किसी भय का कारण हमारे पूर्व जन्म से जुड़ा होता है। किसी दुर्घटना विशेष के कारण हमें पूर्व जन्म में कोई हानि पहुंची है तो हम इस जन्म में उससे बचते हैं। कई बार सुनने में आता है कि अगर किसी व्यक्ति की मृत्यु अनायास हो जाती है तो वह अपने बच्चों को अपने दिल के राज़ उन्हें स्वप्न में आकर बता जाते हैं। इन तथ्यों के पीछे किसी दूसरी दुनिया की तरफ इशारा होता है।

जीवन में हम में से कई लोगों को कई तरह के अतार्किक भय या 'फोबिया' से ग्रस्त पाते हैं। इस तरह के डर की वजह क्या होती है, यह सवाल अक्सर पूछा जाता है। क्यों कुछ लोगों को ऊँचाई से डर लगता है, क्यों कुछ लोग जहाज में सफर करने से घबराते हैं, क्यों कुछ लोग पानी से डरते हैं, कुछ आग से, तो कुछ ऐसी-ऐसी चीजों से भी डरते हैं जिनके बारे में सुनकर हंसी आ सकती है। कुछ लोगों में इस तरह का फोबिया इतना ज्यादा होता है कि वे सामान्य जीवन तक नहीं जी पाते। इन सवालों का मनोवैज्ञानिक जवाब काफी जटिल है लेकिन शोधकर्ता मानते हैं कि कुछ मामलों में इनका संबंध पूर्व जन्म से हो सकता है।

बेहतरीन रहा अनुभव

पास्ट लाइफ रिग्रेशन पर पहले भरोसा नहीं करने और एक बार इस अनुभव से गुजरने वाली लेखिका स्नेहा मेहता ने इस पर बाकायदा एक किताब लिख दी है। 'चेंज योर लाइफ' नाम से किताब लिख चुकी मेहता ने बताया, 'यह दरअसल, दबे-कुचले अरमानों या उपेक्षा के शिकार लोगों को बदले की भावना से मुक्त कराने में सक्षम हैं। कई ऐसी चीजें जो आपको अनायास समझ नहीं आती, वह इस थेरेपी से समाप्त हो सकती है।'

मेहता ने कहा कि सिर्फ दो घण्टे के सेशन ने उन्हें जिन्दगी के मायने समझने के कई मतलब दे दिए। इसके अलावा कई चीजें जो समझ में नहीं आ रही थीं कि ऐसा उनके साथ ही क्यों होता है, अब आसानी से समझ में आने लगी हैं। इससे जिंदगी को व्यवस्थित करने में काफी मदद मिली है। अपनी किताब में मेहता ने इस तरह की कई केस स्टडीज के बारे में विस्तार से लिखा है जो अक्टूबर, 2013 के पहले हफ्ते में रिलीज हो गयी है।

सपनों में पुनर्जन्म के राज

'हीलिंग पास्ट लाइफ थ्रू ड्रीम्स' के लेखक जे.डे. अपने क्लाट्रो फोबिया (संवृत स्थान भीति) के बारे में लिखते हैं कि किसी जगह पर यदि उन्हें अपने हाथ-पैर समेटने पड़े तो बहुत घबराहट होने लगती है। 'मैं इसकी वजह समझ नहीं पाता था लेकिन एक रात मैंने अपने किसी पूर्व जन्म का सपना देखा जिसमें मेरी उस यंत्रणा का खुलासा हो गया।'

वह लिखते हैं, 'एक रात स्वप्नावस्था में मैंने खुद को एक डरावने दृश्य के ऊपर मंडराते देखा। यह पंद्रहवीं सदी के स्पेन का एक कस्बा था। छोटी सी भीड़ एक भयभीत आदमी को पीट रही थी। उस आदमी ने चर्च के बिशप के खिलाफ कुछ कह दिया था। चर्च के अधिकारियों की अनुमति से कुछ स्थानीय गुंडे उसे सबक सिखाने को बेताब थे। भीड़ ने उस आदमी के हाथ-पैर बांध कर कंबल में लपेट दिए। वह उसे पत्थरों की बनी एक परित्यक्त इमारत में ले गए। भीड़ ने उसे फर्श से नीचे अंधेरे गड्ढे में धकेल कर मरने के लिए छोड़ दिया। भय के कातर, मैंने देखा वह आदमी कोई नहीं, मैं था।'

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रिग्रेशन थेरेपिस्ट कारगर

कोई रिग्रेशन थेरेपिस्ट पता लगा सकता है कि नदी, तालाब या पानी से डरने वाला कोई व्यक्ति अपने पूर्व जन्म में डूब कर मरा था जबकि घोड़े से डरने वाला, संभव है, अपने किसी पूर्व जन्म में उसके नीचे कुचलकर मरा हो और इन चीजों का यही भय इस जीवन में भी कायम हो।

यहां अच्छी बात यह है कि ज्यादातर मामलों में यदि एक बार इस तरह के भय के कारण का पता लग जाए तो इनमें पीड़ित व्यक्ति बहुत जल्द इनके भय से मुक्त हो जाता है। मेडिकल समुदाय भी इस बात से सहमत हैं कि इस तरह की थेरेपी जटिल प्रकार के फोबिया दूर करने में प्रभावी है, हालांकि वे पुनर्जन्म की बात का खण्डन करते हैं।

संबंधों के प्रति रूझान

समलैंगिकता और विपरीत लिंग के प्रति रूझान को भी पूर्व जन्म से जोड़ा जाता है। हाल तक माना जाता था कि समलैंगिक व्यवहार स्वयं का चुना गया जीवनशैली से जुड़ा व्यवहार है जिसका मजबूत इच्छाशक्ति से प्रतिकार किया जा सकता है। लेकिन प्रमाण ठीक इसका उलटा बताते हैं। सर्वेक्षणों में पाया गया है कि कुल जनसंख्या में 2-3 प्रतिशत लोगों में किशोरावस्था से समलैंगिक रूझान पैदा या विकसित हो जाते हैं जबकि दूसरे अध्ययन बताते हैं कि समान लिंगी के प्रति आकर्षण में आनुवंशिक संबंध हो सकता है।

निष्कर्ष

पूर्व जन्म के बारे में अनेक कहानियां रोज़ हमारे सामने आती रहती हैं। इस लेख में पूर्व जन्म के बारे में विश्लेषणात्मक अध्ययन पर जोर दिया गया है तथा इस नतीजे पर पहुचा गया है कि पूर्व जन्म के किस्से कुछ मायने तक सत्य हैं, जो घटनाएं पूर्व जन्म से जुड़ी होती हैं इस जन्म में कुछ बच्चे उनके बारे में तमाम जानकारी दे देते हैं। यह आगे की शोध का महत्वपूर्ण विषय है तथा इसके बारे में तार्किक तथा वैज्ञानिक जानकारी जुटाने का कार्य अभी बाकी है जिसके आधार पर एक मजबूत वैज्ञानिक तत्व प्रस्तुत किया जा सके। पूर्व जन्म की कहानी वास्तविक जीवन से अलग किसी दूसरी दुनिया के होने की तरफ इशारा करती है। जो कहीं न कहीं वास्तविक दुनिया के समान्तर चलती रहती है। मूल प्रश्न यह उठता है कि वह दुनिया कौनसी है तथा यह कितनी सत्य बात है। हाल ही में कुछ बच्चों द्वारा अपने पूर्व जन्म के बारे में बताई गई अहम बातों को मद्देनज़र रखते हुए इस विषय पर गहन शोध की आवश्यकता है, जो आने वाले समय में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *तृप्ति जैन, ''पास्ट लाईफ रिग्रेशन थैरेपी'' नेशनल दुनिया, 28 सितम्बर, 2013*
2. *हिन्दुस्तान, ''जन्म के राज़'', 29 मार्च, 2014*
3. *हिन्दुस्तान, ''मनीष की कहानी'', अगस्त, 2013*
4. *अमित त्यागी, ''नेशनल दुनिया का फोक्स'', सितम्बर, 2013*
5. *नेशनल दुनिया, ''पास्ट लाईफ कनैक्शन'', 28 सितम्बर, 2013*
6. *मार्च, 2013 में नेशनल स्माईल (पी॰जी॰) महिला कालेज*
7. *स्नेहा मेहता, 'चेंज योर लाइफ', अक्टूबर, 2013*
8. *जे॰डे॰, 'हीलिंग पास्ट लाइफ थ्रू ड्रीम्स*